

**पर्यनुयोग** पुं. (तत्.) 1. चारों ओर से या सभी प्रकार से पूछना, पूछताछ 2. उपालंभ 3. जिज्ञासा 4. निंदा।

**पर्यय** पुं. (तत्.) 1. शास्त्र विहित, लोकाचार विहित, किसी नियम या क्रम या उल्लंघन, विपर्यय 2. बीत जाना, व्यतीत होना, नष्ट होना 3. विनाश।

**पर्ययण** पुं. (तत्.) 1. चारों ओर घूमना, परिभ्रमण करना 3. घोड़े की पीठ पर बिछाई जाने वाली जीन, काठी।

**पर्यवदात** वि. (तत्.) 1. विशुद्ध, निर्मल, स्वच्छ 2. सुजात, सुविदित, सुपरिचित 3. निपुण, दक्ष।

**पर्यवरोध** पुं. (तत्.) बाधा, विघ्न।

**पर्यवलोकन** पुं. (तत्.) 1. निरीक्षण, चारों ओर देखना, जाँचना।

**पर्यवष्टम्भन** पुं. (तत्.) 1. घेरना, घेरा डालना, आवृत्त करना 2. अवरोध।

**पर्यवसान** पुं. (तत्.) 1. अंत, समापन, समाप्ति 2. अंतर्भाव 3. समाहित होना, विलय होना 4. रोग 5. क्रोध 6. ठीक-ठाक अर्थ निर्धारित करना।

**पर्यवसित** वि. (तत्.) 1. समाप्त, खत्म, नष्ट 2. निश्चित।

**पर्यवस्था** स्त्री. (तत्.) विरोध, खंडन, प्रतिवाद, प्रतिपथावाद।

**पर्यवस्थाता** पुं. (तत्.) 1. प्रतिवादी, प्रतिपक्षी 2. विरोधी।

**पर्यवस्थान** पुं. 1. प्रतिवाद करना, खंडन करना 2. विरोध करना 3. अच्छी अवस्थिति।

**पर्यवेक्षक** पुं. (तत्.) 1. पर्यवेक्षण करने वाला, यह देखने वाला कि कार्य ठीक से चल रहा है या नहीं, ठीक से संपन्न हुआ है या नहीं 2. कार्य की ठीक से देख-रेख करने वाला अधिकारी।

**पर्यवेक्षण** पुं. (तत्.) चारों दिशाओं से देखना, समीक्षा करना, अवलोकन करना।

**पर्यसन** पुं. (तत्.) 1. फेंकना 2. दूर करना 3. निकालना 2. भेजना 3. रद्द करना 4. नष्ट करना।

**पर्यस्त** वि. (तत्.) 1. बाहर किया हुआ 2. विस्तृत, फैला हुआ 3. दूर किया हुआ, दूरीकृत 4. फेंक दिया गया 5. जिसका पर्यसन हो गया हो, हत, मारा हुआ।

**पर्यस्तापह्नुति** स्त्री. (तत्.) अर्थालंकारों का एक प्रकार जिसमें वस्तु के गुण को छिपाकर उस गुण को किसी अन्य पर आरोपित कर दिया जाए, उपमान के गुण को जहाँ उपमेय में स्थापित कर दिया जाए।

**पर्यस्ति** स्त्री. (तत्.) 1. वीरासन पर विराजित होना 2. फेंकना, दूर करना।

**पर्यस्तिका** स्त्री. (तत्.) 1. वीरासन 2. पर्यंक, पलंग।

**पर्याकुल** वि. (तत्.) 1. अत्यधिक व्याकुल, बेचैन, घबराया हुआ, क्षुब्ध 2. भरा हुआ, पूर्ण जैसे-अश्रुपर्याकुल, गुणपर्याकुल 3. उत्तेजित 5. गंदला, पंकिल, मैला, मालिन्य युक्त 6. भरा हुआ।

**पर्याकुलता** स्त्री. (तत्.) 1. पर्याकुल होने का भाव, व्याकुलता, व्यग्रता।

**पर्यागत** वि. (तत्.) 1. जिसका सांसारिक जीवन समाप्त हो चुका हो 2. जो अपना चक्कर पूरा कर चुका हो, परिक्रमा पूरी कर चुका हो 3. वशीकृत।

**पर्याचांत** पुं. (तत्.) 1. एक पंक्ति में या एक साथ बैठकर भोजन करने वाले में से किसी के बीच में ही उठ जाने पर उस की पत्तल या थाली में बचा भोजन 2. दूषित या झूठा अन्न जो किसी के द्वारा बीच में ही छोड़कर उठ खड़े होने पर बच जाता है।

**पर्याण** पुं. (तत्.) घोड़े की पीठ पर रखा पलान, घोड़े की जीन, घोड़े की काठी।

**पर्याप्त** वि. (तत्.) 1. पूरा, यथेष्ट, काफी, जितना आवश्यक हो उतना 2. मिला हुआ, प्राप्त 3.